अक्षर गढ़, आगे बढ़
नफरत के अंधियारे की
ज्ञान ज्योत से काट दे जड़।

हाथी की पों

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना
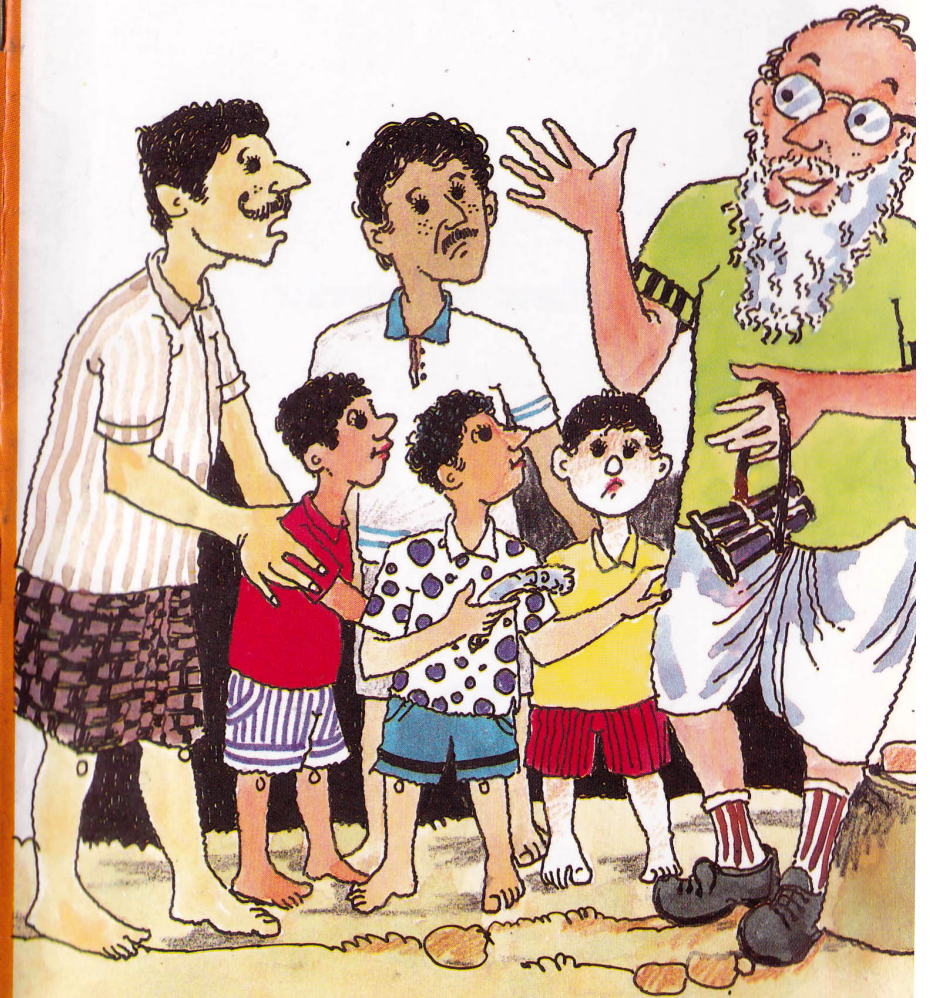
हाथी की पों

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना

वाणी प्रकाशन
21-ए, दरियागंज, नयी दिल्ली-110002

संस्करण : 2012 ISBN : 978-93-5000-657-3 मूल्य : 30.00
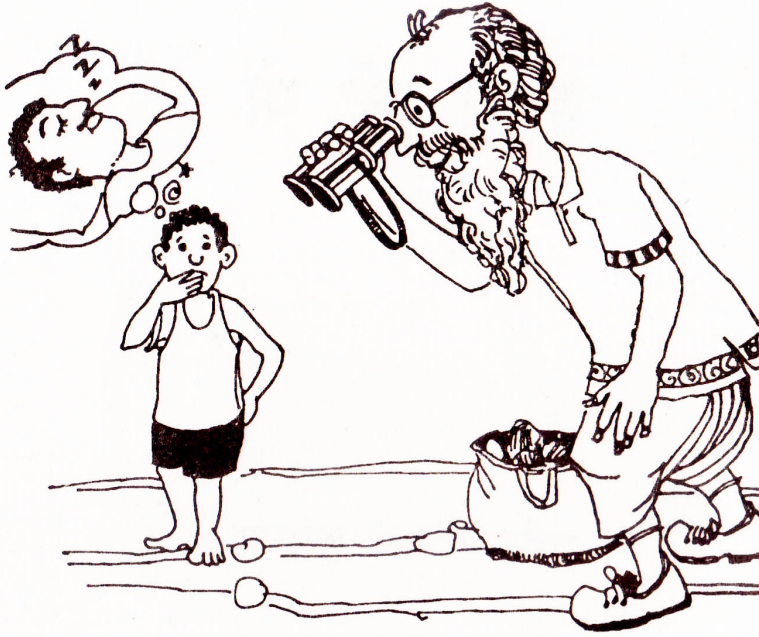
[लम्बी सफेद दाढ़ी वाला एक बूढ़ा मंच पर चारों ओर घूम-घूमकर, जमीन में आँख गड़ाकर कुछ खोज रहा है। फिर जेब से ऐनक निकालकर उसी तरह कुछ खोजता है, फिर दूरबीन निकालकर खोजता है, तभी एक बच्चे का प्रवेश।]

बच्चा : बाबाजी, तुम क्या खोज रहे हो?

[बूढ़ा कुछ नहीं बोलता।]

बच्चा : तुम्हारा कुछ गिर गया है क्या बाबा जी?

[बूढ़ा उसकी ओर देखता तक नहीं, उसी तरह जमीन पर आंख गड़ाए खोजता रहता है।]

बच्चा : हम मदद करें बाबा जी? क्या गिर गया है?

बाबा : (छड़ी दिखाकर) तुम मदद करोगे? मारते-मारते भुरता बना दूँगा। जाओ अपना काम देखो।

बच्चा : मुझे कोई काम नहीं है।

बाबा : घर जाओ।

बच्चा : घर में सब सो रहे हैं।

बाबा : इतनी देर तक सो रहे हैं?

बच्चा : यहाँ सब रात-दिन सोते हैं।

बाबा : स्कूल जाओ।

बच्चा : स्कूल में बस प्रार्थना होती है फिर सब टीचर सो जाते हैं।

बाबा : इस बस्ती में कोई कुछ नहीं करता? सब सोते हैं? तुम क्या करते हो?

बच्चा : मैं खेलता हूँ।

बाबा : अकेले?

बच्चा : नहीं, और बच्चों के साथ।

बाबा : लेकिन यहाँ तो तुम अकेले हो। कहाँ हैं और बच्चे?

बच्चा : हमारा पिल्ला खो गया है न, उसी को जंगल में ढूँढ़ने गए हैं। मैं भी वहीं जा रहा था। क्या खो गया है आपका ? मैं ढूँढ़ दूँ?

बाबा : बेटा, तुम नहीं समझोगे...मैं हाथी की पों' खोज रहा हूँ।

बच्चा : हाथी की पों? वह क्या होती है?

बाबा : वह इस दुनिया की सबसे कीमती चीज है।

बच्चा : सोने-चाँदी से भी ज्यादा?

बाबा : अरे, सोना-चाँदी, हीरे-जवाहरात उसके सामने कुछ नहीं, मिट्टी है मिट्टी!

बच्चा : क्या बहुत छोटी होती है वह?

बाबा : नहीं, बहुत बड़ी होती है, हिमालय से भी **बड़ी**।

बच्चा : क्या कहते हैं आप! फिर इस तरह क्यों खोज रहे हैं?

बाबा : वह दिखाई जो नहीं देती। एक बार जो दीख जाए, फिर खोती नहीं। बड़ी और बड़ी होती जाती है।

बच्चा : उसका रंग क्या होता है?

बाबा : जिस रंग में चाहोगे हो जाएगी।

बच्चा : सच? लाल, नीली, पीली, हरी...क्या भारी होती है?

बाबा : शुरू-शुरू में भारी होती है, फिर हल्की होती जाती है।

बच्चा : **(तुनककर)** सच बताइए, यह क्या है हाथी की **पों**?

बाबा : मिल जाए तब न बताऊँ...

बच्चा : आप तो जानते हैं इतना...

[बूढ़ा फिर खोजने लगता है।]

बच्चा : आपके पास थी? कहाँ रखा था आपने ? कैसे

गिर गई?

बाबा : थी कहाँ! मैं तो बहुत दूर रहता हूँ। किसी ने बताया कि तुम्हारी इस बस्ती में मिलेगी। तो मैं चलता-चलता नदी, पहाड़, जंगल पार करता यहाँ आ गया हूँ। सोचा पहले उसे ढूँढ़ो। मैं हाथी की पों ढूँढ़ता हूँ।

[अचानक बच्चों का शोर करते हुए प्रवेश। एक बच्चा कूं-कूं करता पिल्ला बन जाता है।]

बच्चा : शोर मत करो। चुप रहो। बाबा हाथी की पों ढूँढ़ रहे हैं।

[यह कह वह भी ढूँढ़ने लगता है। उसकी देखी-देखी और बच्चे भी जमीन में आँख गड़ाए कुछ ढूँढ़ने लगते हैं।]

बच्चा : बाबा मेरा थिंकर ढूँढ़ देगा।

बाबा : थिंकर

बच्चा : हमारे पिल्ले का नाम थिंकर है। थिंकर ! **थिंकर**

तुम भी ढूँढ़ो [इशारा करता है।]

[थिंकर कूं-कूं करता पूरे मंच पर उछल-उछलकर हाथी की पों खोजता है। थोड़ी देर बाद सब थककर बैठ जाते हैं।]

बाबा : क्या हुआ ? बैठ क्यों गए?

बच्चा : हम लोग थक गए।

बाबा : तुम लोगों को काम करने की आदत नहीं है? बिना मेहनत किए कुछ नहीं मिलता। हाथी की पों क्या मिलेगी!

[बूढ़ा ढूँढ़ता रहता है, बच्चे फिर ढूँढ़ना शुरू करते हैं।]

बच्चा : (अचानक एक पंख लेकर दिखाता है) यह क्या है?

बाबा : यह तो चिड़िया का पंख है।

[सभी बच्चे तिनका, टहनी, तरह-तरह की चीजें दिखाते हैं। बाबा सबका नाम लेकर बताता है कि वह क्या है और कहता जाता है कि वह हाथी की पों नहीं है।]

बच्चा : फिर क्या है हाथी की पों?

[बाबा गाने लगता है :]

पों पों पों हाथी की पों
बहुत बड़ी बहुत बड़ी हाथी की पों
बहुत छोटी बहुत छोटी हाथी की पों
यहीं कहीं होगी पड़ी हाथी की पों
पों पों पों हाथी की पों

खोजो   ब च चा

खोजो

सभी बच्चे : (गाते हुए खोजते हैं)

पों पों पों हाथी की पों
पों पों पों हाथी की पों

[बाबा गाना बढ़ाता जाता है और बच्चे उसके साथ एक-एक कड़ी जोर-जोर से गाते-दोहराते जाते है :]

पों पों पों हाथी की पों
कहाँ गई कहाँ गई हाथी की पों
यहाँ गई वहाँ गई हाथी की पों
धूल में नहा गई हाथी की पों
आंधी बहा गई हाथी की पों

पों पों पों हाथी की पों

[गाने की आवाज सुनकर गाँव का एक आदमी आँख मलता आता है...वह नींद से जागा है।]

आदमी : क्या शोर मचा रखा है! सोना हराम कर दिया।

बच्चे : हम हाथी की पों खोज रहे हैं, बड़ा मजा आ रहा है। तुम भी खोजो अंकल।

आदमी : चुप करो बदमाशो! यह हाथी की पों क्या होती है? हाथी के कान, पैर, सूँड, पूँछ तो होती है, लेकिन पों क्या होती है?

बच्चा : ढूँढ़ो तब पता चलेगा, क्या होती है! बाबा जी बहुत दूर से आए हैं उसे ढूँढ़ने। अंकल, वह बहुत कीमती है, सोने-चाँदी, हीरे-जवाहरात से भी ज्यादा। मालामाल हो जाओगे!

आदमी : बिना काम किए मालामाल हो जाऊँगा? फिर तो बात ही क्या है। हम सब मिलके ढूँढ़ लेंगे...

बाबा : ढूँढ़ो...ढूँढ़ो, मेहनत से ढूँढ़नी पड़ेगी। आसानी से वह नहीं मिलती।

[बाबा गाने लगता है और उसके साथ वह आदमी भी। सब एक-एक कड़ी दोहराते खोजने लगते हैं। धीरे-धीरे गाँव के और आदमी भी आँखें मलते आते हैं और सबकी तरह गाने में शामिल हो, ढूँढ़ने लग जाते हैं :]

पों पों पों हाथी की पों

हीरे-मोती से है भारी हाथी की पों
खेतों-सी हरी-हरी हाथी की पों
बात करे खरी-खरी हाथी की पों
पों पों पों हाथी की पों
छोटी होती पड़ी-पड़ी हाथी की पों
बड़ी होती खड़ी-खड़ी हाथी की पों
प्यारी होती घड़ी-घड़ी हाथी की पों
पों पों पों हाथी की पों

[सब थककर माथे की पसीना पोंछते हैं और हाँफते-हाँफते

गाते हुए बैठ जाते हैं, लेकिन बाबा ढूँढ़ता रहता है।]

बाबा : इतनी जल्दी थक गए?

आदमी : जल्दी ? इतनी मेहनत तो हम लोगों ने जीवन-भर नहीं की।

बाबा : मजा आ रहा है?

आदमी : खाक मजा आ रहा है! मिल तो रही नहीं है।

बाबा : मिलेगी, मिलेगी। खोजते रहो—जरूर मिलेगी।

आदमी : सुबह से दोपहर तो हो गई।

बाबा : अभी तो शाम है, रात है, फिर सुबह है, फिर।

आदमी : क्या बहुत दिन खोजनी पड़ेगी।?

बाबा : यह तो मैं नहीं जानता। मैं तो जब तक नहीं मिलेगी खोजूँगा। तुम लोग चले जाओगे तो अकेले खोजूँगा...

बच्चा : मैं तुम्हें अकेले नहीं खोजने दूँगा। मैं तुम्हारे साथ रहूँ। मैं देखूँगा—वह कैसी है, कितनी बड़ी है। उसे मैं खूब बड़ी बनाऊगा। जिस रंग की चाहूँगा बनाऊँगा बाबा! क्या मैं चाहूँ तो उसे छोटी करके अपने जेब में भी रख सकता हूँ?

बाबा : हाँ, अँगूठी की तरह डिबिया में बंद कर सकते हो। सबको दिखा सकते हो कि यह हाथी की पों है, जिसे तुमने खोजा है।

बच्चा : बाबा, अगर मिल गई तो तुम उसे लेकर भाग तो नहीं जाओगे? मैं तुम्हें नहीं ले जाने दूँगा।

बाबा : तुमको अलग मिलेगी, हमको अलग। सब को अलग-अलग अपनी-अपनी मिलेगी।

सभी बच्चे : तब तो हम भी खोजेंगे बाबा। हम नहीं जाएँगे।

[बच्चे उत्साह में गाते हुए खोजने लगते हैं। उनकी देखा-देखी आदमी भी गाते हुए उनके साथ खोजने लगते हैं। बाबा चुपचाप खड़ा देखता मुस्कराता रहता है, फिर वह उनके गाने में शामिल हो गाने को आगे बढ़ाता है।]

पों पों पों हाथी की पों
आ गयी, आ गयी हाथी की पों
इधर से आ गयी हाथी की पों
उधर से आ गयी हाथी की पों

सबमें समा गयी हाथी की पों
चारों तरफ छा गयी हाथी की पों
भा गयी, भा गयी हाथी की पों
पों पों पों हाथी की पों

[गाते-गाते एक बार फिर सब पसीना पोंछते, थककर रुक जाते हैं। लेकिन इस बार गिरकर बैठ नहीं जाते—हाँफते रहते हैं।]

आदमी : आखिर कब तक खोते रहें? कोई अंत तो होगा? कहाँ आ गई, कहाँ समा गई, कहाँ छा गई...यह हाथी की पों

बाबा : खोजते रहो, मिल जाएगी। मजा आ रहा है या नहीं ?

आदमी : पसीने-पसीने हो गए...

बाबा : अब ठंडी हवा अच्छी नहीं लग रही है?

आदमी : लग तो रही है।

बाबा : पहले कभी इतनी अच्छी लगी थी?

आदमी : नहीं

बाबा : खोजो, खोजो, अभी और अच्छी लगेगी। हवा, धूप, चाँदनी, यानी सब और अच्छे लगेंगे, और अच्छे लगते जाएँगे।

बच्चे : हमें तो बहुत मजा आ रहा है।

आदमी : क्या ईश्वर से प्रार्थना करने से जल्दी मिल जाती है?

बाबा : नहीं, केवल प्रार्थना करने से नहीं मिलेगी। प्रार्थना के बाद खोजना पड़ेगा, खोजने से मिलेगी।

बच्चा : लेकिन हमें तो एक ही प्रार्थना आती है, यही हमारे स्कूल में कराई जाती है।

आदमी : यह हम लोगों की पुश्तैनी प्रार्थना है। इसी प्रार्थना के सहारे हम जीवित हैं। थोड़ी देर खोजना रोक कर यदि हम प्रार्थना कर लें!

बच्चा : कर लीजिए, पर मैं तो खोजता रहूँ।

[बाबा खोजना शुरू करता है, लोग आँखें बंद कर प्रार्थना करने लगते हैं—बच्चे, आदमी सभी कतार बनाकर हाथ जोड़ कर गाने लगते हैं :]

वह शक्ति हमें दो दयानिधे
बिस्तर पर जाकर पड़ जाएँ,
कुछ कामकाज करना न पड़े,
चाहे हम लाख उजड़ जाएँ।

जो काम करे भूले-भटके,
वे सह न सके अपने झटके,
हम जड़ से उन्हें उखाड़ सकें
चाहे हम स्वयं उखड़ जाएँ।

नेता हो या अभिनेता हों
या कर्मवीर युगचेता हों,
जो हमें उठाने को आएँ,
वे स्वयं शर्म से गड़ जाएँ।

यदि जोर-जबरदस्ती भी हो
तो अपनी यह हस्ती भी हो
वे खुद अपने से लड़ जाएँ,
हम पड़े-पड़े यूँ अड़ जाएँ।
वह शक्ति हमें दो दयानिधे,
बिस्तर पर जाकर पड़ जाएँ,
कुछ कामकाज करना न पड़े,
चाहे हम लाख उजड़ जाएँ।

[बूढ़ा धीरे-धीरे मुस्कारता हुआ उन्हें आँख बंद कर गाते छोड़ मंच से बाहर चला जाता है।]

आदमी लोग : अरे ! बाबा कहाँ चला गया? बाबा ! बाबा! (पुकारते हैं)

बच्चा : लगता है जितनी देर हम प्रार्थना कर रहे थे, उतनी देर से उसे हाथी की पों मिल गई होगी।

मैं उसे देखता हूँ।

[बच्चा ज्यों ही जाने लगता है, पैरों के पास एक डिब्बा मिलता है, वह उसे खोलता है।]

सभी : क्या यह हाथी की पों है ?

बच्चा : यह तो एक चिट्ठी है ! 'जिस चीज को भी खोजों पूरी लगन से खोजो। बिना मेहनत के जो मिलता है, वही 'हाथी की पों' है। वह दुनिया में सबसे कीमती, सबसे सुंदर, सबसे बड़ी है, उसे जिस रंग में चाहो उस रंग में खोज लो।' खोजो मुझे मिल गई है, तुम सबको भी मिल जाएगी।

[बच्चा चिट्ठी फाड़कर हवा में उड़ा देता है और उछल कर पूरे उत्साह से गाने लगता है। अब बूढ़े की जगह उसके साथ-साथ सब एक-एक कड़ी दोहराते गाते हैं।]

बच्चा : मिल गई, मिल गई हाथी की पों।
यही मिली, यही मिली हाथी की पों
सबसे सुंदर हाथी की पों
सुख का समुन्दर हाथी की पों
बाहर अंदर हाथी की पों
तुम भी खोजो हाथी की पों

लेकर जाओ हाथी की पों
यही है, यही हाथी की पों
बोले सब जै हाथी की पों
जै जै जै हाथी की पों

[सब बच्चे और आदमी गाते-गाते फावड़ा, **कुदाल**, हँसिया, हथोड़ा हाथ में ले कर नाचते हैं।]

●●●